Daily Gospel Reflections in Hindi

25 August 2019

लूकस 16: 19 - 31

Show concern for the poor

हमारी आत्मा को अनंत विनाश से बचाने के लिए हर संभव मार्ग प्रभु ने विभिन्न माध्यमों से हमें बताये हैं, अगर समय रहते हम उन का उचित प्रयोग नहीं करते तो हम स्वयं अपनी मुक्ति को असंभव बना लेते हैं। हमारी मृत्यु के बाद हम आत्मा को बचाने के लिए कुछ नहीं कर सकते और विवश हो कर दूसरों के द्वारा किये जाने वाले त्याग और प्रार्थना पर निर्भर रहना पड़ेगा। यह अवसर है चिंतन करने का कि हम कितनी आत्माओं को बचाने के लिए प्रार्थना और त्याग करतें हैं? हमारी रोजरी माला के भेद में हम शोधकागिन में तड़पती आत्माओं के लिए प्रार्थना करने को कलीसिया आह्वान करती है। हम में से कितने लोग उस समय मृत्कों के लिए वास्तव में प्रार्थना करतें है। प्रारंभिक कलीसिया में मृत्कों की आत्मा मुक्ति के लिए अनेक परंपराए, विश्वास व कर्म प्रचलित थे। संत पॉलुस के पत्र में हम मृत्कों के नाम पर बप्तिस्मा लेने का जिक्र भी देखतें हैं (1कुरिथ 15:19) वर्तमान में यह लुप्त होती जा रही है। यदि हम आज मृत्कों के लिए प्रार्थना, त्याग नहीं करते तो कौन हमारी मृत्यु के बाद हमारे लिए यह सब करेगा? आज के सुसमाचार में हम पढ़ते कि मृत्योपरांत रहम की कोई भी दलील पर ध्यान नहीं दिया जायेगा। हम अभी से सभी बंधित आत्माओं के लिए त्याग और प्रार्थना करें जिस से हमारी मृत्योपरांत हमें भी इसका फल मिले।

नरकाग्नि में पड़ने के लिए हत्या, चोरी, डकैती, व्याभिचार या ईशनिंदा जैसे बड़े पाप की जरुरत नहीं बल्कि जरुरतमंद की अनदेखी करना ओर उन्हें दुत्कारना या उनकी उपेक्षा करना भी ईश्वर की दृष्टि में जघन्य अपराध है। अमीर व्यक्ति किसी "बड़े" पाप के कारण नही लेकिन आखों के सामने जरुरत में पड़े लाजरुस की उपेक्षा थी। प्रभु का दूसरा आदेश है अपने पड़ोसी को ...क्या हम यह जिम्मेदारी के साथ कर रहे हैं। लोगी की जरुरत को हम अक्सर उनकी लाचारी, बेबसी, कामचोरी, चतुराई, छल, आदि से जोड़ देते और उन की मदद ना करने का स्वयं ही कारण बना लेते हैं। कहीं ऐसा ना हो कि अमीर के बगल में हमें भी स्थान मिले। हम मनन और मूल्यांकन करें।

Rev. Fr. Anil Francis

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019